आचार्य विद्यानन्द

जीवन-परिचय : आचार्य विद्यानन्द ऐसे विद्वान हैं, जिन्होंने न्यायशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों की रचना कर श्रुतपरम्परा को गतिशील बनाया है। आप अपने समय के प्रसिद्ध तार्किक विद्वान थे। आपकी कृतियाँ आपके पाण्डित्य और प्रतिभा का पद-पद पर अनुभव कराती हैं। जैनदर्शन आपकी कृतियों से गौरवान्वित है। आचार्य विद्यानन्द दक्षिण भारत के कर्णाटक प्रान्त के निवासी थे। इसी प्रदेश को इनकी साधना और कार्यभूमि होने का सौभाग्य प्राप्त है। किंवदन्तियों के आधार पर यह माना जाता है कि इनका जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ था। ये जन्म से होनहार और प्रतिभाशाली थे। इन्होंने वैशेषिक, न्याय, मीमांसा, वेदान्त आदि वैदिक दर्शनों का अच्छा अभ्यास किया था और बौद्धदर्शन के मन्तव्यों में विशेषतया दिग्नाग, धर्मकीर्ति और प्रज्ञाकर आदि प्रसिद्ध बौद्ध विद्वानों के दार्शनिक ग्रन्थों का भी परिचय प्राप्त किया था। इस तरह वे अन्य दर्शनों और जैन सिद्धान्त ग्रन्थों के भी विशिष्ट विद्वान थे।

आचार्य विद्यानन्द प्रसिद्ध वैयाकरण, श्रेष्ठ कवि, अद्वितीय वादी, महान सैद्धान्तिक, महान तार्किक, सूक्ष्म प्रज्ञ और जिनशासन के सच्चे भक्त थे। आपकी रचनाओं पर आचार्य गृद्धपिच्छा, स्वामी समन्तभद्र, श्रीदत्त, सिद्धसेन, पात्रस्वामी, भट्टाकलंकदेव और कुमारनन्दि भट्टारक आदि पूर्ववर्ती विद्वानों की रचनाओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

आचार्य विद्यानन्द ने अपनी किसी भी कृति में समय का निर्देश नहीं किया है। फिर भी इनका समय आचार्य माणिक्यनन्दि और अकलंक के मध्य अर्थात 8वीं-9वीं शताब्दी माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य विद्यानन्द की रचनाओं को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

स्वतन्त्र ग्रन्थ :

1. **आप्तपरीक्षा स्वोपज्ञवृत्तिसहित :** इस ग्रन्थ में 124 कारिकाएँ हैं और परमेष्ठी के गुणस्तोत्र की आवश्यकता एवं विभिन्न आप्तों के निराकरण पूर्वक सच्चे आप्त का स्वरूप बतलाया गया है।

2. **प्रमाणपरीक्षा :** इसमें प्रमाण का सम्यग्ज्ञान लक्षण करके उसके भेद-प्रभेदों और विषय का वर्णन किया है। इसमें प्रमाण की विस्तृत चर्चा सरल गद्य में है।

3. **पत्रपरीक्षा :** इस लघुकाव्य ग्रन्थ में विभिन्न दर्शनों की अपेक्षा 'पत्र' के लक्षणों को उद्धृत कर जैन दृष्टिकोण से 'पत्र' का लक्षण दिया गया है तथा प्रतिज्ञा और हेतु-इन दो अवयवों को ही अनुमान का अंग बताया है।

4. **सत्यशासनपरीक्षा :** इसमें पुरुषाद्वैत आदि 12 शासनों की परीक्षा की प्रतिज्ञा की गयी है, किन्तु 9 शासनों की परीक्षा पूरी और प्रभाकर शासन की अधूरी परीक्षा उपलब्ध होती है। यह ग्रन्थ भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित है।

5. **विद्यानन्दमहोदय :** आचार्य विद्यानन्द की यह सबसे पहली रचना है। इसके पश्चात् ही उन्होंने तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक और अष्टसहस्री आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की है। यह ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है, पर उसका नामोल्लेख श्लोकवार्तिक आदि ग्रन्थों में मिलता है।

6. **श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र :** श्रीपुर या अन्तरिक्ष के पार्श्वनाथ की स्तुति में तीस पद्य लिखे गये हैं। इस स्तोत्र में दर्शन और काव्य का गंगा-यमुनी संगम है।

टीकाग्रन्थ :

1. **अष्टसहस्री :** यह जैन न्याय का अत्यन्त महनीय ग्रन्थ है। इस एक ग्रन्थ के अध्ययन कर लेने पर अन्य ग्रन्थ पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। स्वयं आचार्य विद्यानन्दजी ने कहा है कि हजार शास्त्रों को सुनने से क्या, केवल अष्टसहस्री को सुन लेने से स्वसिद्धान्त और परसिद्धान्तों का ज्ञान हो जायेगा। यह आचार्य समन्तभद्र के देवागम स्तोत्र पर लिखी गयी विस्तृत टीका है। इसमें 10 परिच्छेद हैं।

2. **युक्त्यनुशासनालंकार :** यह आचार्य समन्तभद्र के महत्त्वपूर्ण और गम्भीर स्तोत्रग्रन्थ की टीका है । इसमें अन्तिम तीर्थंकर महावीर के शासन की परीक्षा की गयी है। यह गूढ़ दार्शनिक चर्चा से ओत-प्रोत है। इस ग्रन्थ पर पं. जुगलकिशोर जी मुख्तार एवं पं. मूलचन्द्रजी शास्त्री महावीरजी ने भी टीका लिखी है।

3. **तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक :** टीकाग्रन्थों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्वार्थ-

श्लोकवार्तिक है। यह ग्रन्थ आचार्य गृद्धपिच्छ उमास्वामी के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र पर कुमारिल के मीमांसाश्लोकवार्तिक और धर्मकीर्ति के प्रमाणवार्तिक की तरह पद्यात्मक शैली में लिखा गया है। विद्यानन्द ने इसकी रचना करके कुमारिल, धर्मकीर्ति जैसे प्रसिद्ध तार्किकों के जैनदर्शन पर किये गये आक्षेपों का उत्तर दिया है।